GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

राष्ट्रीय शिक्षण नीति 2020 में प्रतिबिंबित भारतीय ज्ञान प्रणाली की विभिन्न कला

डॉ.अशोक परमार

सह प्राध्यापक हिंदी शिक्षा विभाग, शिक्षा संकाय, गूजरात विद्यापीठ अहमदाबाद 09

प्रस्तावना

प्राचीन काल की शिक्षा प्रणाली ज्ञान, परंपराएं और प्रथाएं मानवता को प्रोत्साहित करती थी। पुराणों में ज्ञान को अप्रतिम माना गया है (ब्रह्माण्ड पुराण, 1/4/15)। भारत के तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, बल्लभी, उज्जयिनी, काशी आदि विश्व प्रसिद्ध शिक्षा एवं शोध के प्रमुख केन्द्र थे तथा यहां कई देशों के शिक्षार्थी ज्ञानार्जन के लिए आते थे। वैदिक काल में महिलाओं की शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रसिद्धि थी। जिसमें मैत्रेयी, ऋतम्भरा, अपाला, गार्गी और लोपामुद्रा आदि जैसे नाम प्रमुख थे। बोधायन, कात्यायन, आर्यभट्ट, चरक, कणाद, वाराहमिहिर, नागार्जुन, अगस्त्य, भर्तृहरि, शंकराचार्य, स्वामी विवेकानंद जैसे अनेकानेक महापुरुषों ने भारत भूमि पर जन्म लेकर अपनी मेधा से विश्व में भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रसिद्धि हेतु अतुल्य योगदान दिया है।

गुरुकुल शिक्षा के प्रमुख आधार स्तंम्भ थे, शिक्षार्थी अठारह विद्याओं - छः वेदांग, चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वेद), चार उपवेद (आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद, शिल्पवेद), मीमांसा, न्याय, पुराण तथा धर्मशास्त्र का अर्जन गुरु के निर्देशन में ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए अनुष्ठानपूर्वक अभ्यास कर सम्पादन करते थे, जिससे आजीविका निर्वहन में कोई परेशानी नहीं होती थी तथा प्रौढ़ावस्था तक आते-आते अपने विषय के निपुण ज्ञाता बन जाते थे। त्याग, वृत्तिसम्पन्न तथा धन की तृष्णा से परे आचार्य ही भारतीय शिक्षा पद्धति में शिक्षक माना गया है। शिक्षा को व्यवसाय और धनार्जन का साधन नहीं माना जाता था। वायु पुराण (77/128) में उल्लेख है कि गुरु रूपी तीर्थ से सिद्धि प्राप्त होती है तथा वह सभी तीर्थों से श्रेष्ठ है। प्राचीन भारतीय सनातन ज्ञान परंपरा अति समृद्ध थी तथा इसका उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को समाहित करते हुए व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व को विकसित करना था। जब सारा विश्व अज्ञान रूपी अंधकार में भटकता था, तब सम्पूर्ण भारत के मनीषी उच्चतम ज्ञान का प्रसार करके मानव को पशुता से मुक्त कर, श्रेष्ठ संस्कारों से युक्त कर संपूर्ण मानव बनाते थे।

प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तैयार की गई है। ज्ञान, प्रज्ञा और सत्य की खोज को भारतीय विचार परंपरा और दर्शन में सदा सर्वोच्च लक्ष्य माना जाता था। प्राचीन भारत में शिक्षा का लक्ष्य सांसारिक जीवन अथवा स्कूल के बाद के जीवन की तैयारी के रूप में ज्ञान अर्जन नहीं बल्कि पूर्ण आत्म ज्ञान और मुक्ति के रूप में माना गया था। भारत द्वारा 2015 में अपनाए गए सतत् विकास एजेंडा 2030 के लक्ष्य चार में परिलक्षित वैश्विक शिक्षा विकास योजना के अनुसार विश्व में 2030 तक सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्तायुक्त शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवन पर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा दिए जाने का लक्ष्य है। इस हेतु संपूर्ण शिक्षा प्रणाली को समर्थन और अधिगम को बढ़ावा देने के लिए पुनर्गठित करने की आवश्यकता होगी ताकि सतत् विकास के लिए 2030 एजेंडा के सभी महत्वपूर्ण लक्ष्य प्राप्त किया जा सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार 2040 तक भारत के लिए एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य होगा जो कि किसी से पीछे नहीं है। ऐसी शिक्षा व्यवस्था जहां किसी भी सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से संबिंधत शिक्षार्थियों को समान रूप से सर्वोच्च गुणवत्ता की शिक्षा उपलब्ध हो सकेगी। यह 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है, जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है तथा भारत की परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों के आधार को बरकरार रखते हुए, 21वीं सदी की शिक्षा के लिए आकांक्षात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करना है।

हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली ने व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर ध्यान केंद्रित किया तथा विनम्रता, सच्चाई,

https://www.gapbhasha.org/

अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सम्मान जैसे मूल्यों पर बल दिया। भारत में शिक्षा का स्वरूप व्यावहारिकता को प्राप्त करने योग्य और जीवन में सहायक है। इस प्रकार, यह ध्यातव्य है कि NEP 2020 ने न केवल प्राचीन भारत के गौरवशाली अतीत को मान्यता दी है, बल्कि प्राचीन भारत के विद्वानों जैसे- चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, मैत्रेयी, गार्गी आदि के विचारों एवं कार्यों को वर्तमान पाठ्यक्रम में प्री-स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक शामिल करने की ओर भी हमारा ध्यान आकृष्ट किया है।

प्रस्तुत शोध आलेख में शोधकर्ता ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में उल्लेखित 14 विद्या जिसमे 4 वेद ((रुग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद), 6 वेदांग (शिक्षण, व्याकरण, निरुकत, छंद, कल्प, ज्योतिष), 4 उपवेद (आयुर्वेद, धनुर्वेद, गंधर्ववेद, शिल्पवेद/स्थापत्यवेद)) और 64 कलाओं का अध्ययन किया है। शोधकर्ता के द्वारा भारतीय ज्ञान प्रणाली का अध्ययन करने पर उपरोक्त 14 विद्या और 64 कलाओं के विषय में जानकारी प्राप्त हुई । शोधकर्ता के द्वारा अध्यापित भारतीय ज्ञान प्रणाली के अंतर्गत 64 कलाओं के 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहाँ दर्शन होते है ? इस बात को उजागर करने का प्रयास किया है।

शोधपत्र की मर्यादा को ध्यान में रखते हुए केवल राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अध्याय-4 (स्कूलों में पाठ्यक्रम और शिक्षण-शास्त्र:अधिगम समग्र, एकीकृत, आनंददायी और रुचिकर होना चाहिए) में समविष्ट 64 कलाओं से सम्बन्धित विवरण का अनुसंधान करके शोधकर्ता ने प्रस्तुत किया है।

राष्टीय शिक्षा नीति 2020 के उपभाग 4.27 में लिखा है "भारत का ज्ञान" में आधुनिक भारत और उसकी सफलताओं और चुनौतियों के प्रति प्राचीन भारत का ज्ञान और उसका योगदान शामिल होगा, और शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण आदि के सम्बन्ध में भारत की भविष्य की आकाक्षाओं की स्पष्ट भावना शामिल होगी । इन तत्वों को पुरे स्कुल पाठ्यक्रम में जहाँ भी प्रासंगिक हो वहाँ वैज्ञानिक तरीके से और एक सटीक रूप से शामिल किया जायेगा । विशेष रूप से भारतीय ज्ञान प्रणाली को आदिवासी ज्ञान एवं सिखाने के स्वदेशी और पारंपरिक तरीकों सहित कवर किया जाएगा और गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा कृषि इंजीनियरिंग भाषा विज्ञान साहित्य खेल के साथ-साथ शासन, राजव्यवस्था, सरंक्षण आदि विषयों में शामिल किया जाएगा । **भारतीय ज्ञान प्रणाली पर एक आकर्षक पाठ्यक्रम** भी एक वैकल्पिक विषय के रूप में माध्यमिक विद्यालय छात्रों के लिए उपलब्ध होगा ।

उपर्युक्त विवरण के आलावा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में समाविष्ट भारतीय ज्ञान प्रणाली की 64 कलाओं के दर्शन प्राप्त होते है । जो निम्नांकित है -

राष्ट्रीय शिक्षा 2020 में प्रतिबिंबित भारतीय ज्ञान प्रणाली की विभिन्न कलाएँ

यहाँ निम्नांकित विवरण में भारतीय ज्ञान प्रणाली की 64 कालों के नाम और उसके साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में समाविष्ट भारतीय ज्ञान प्रणाली की 64 कलाओं का विवरण प्रस्तुत किया है ।

कला - गीत गाना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अध्याय 4 के उपविभाग 4.21 में इस कला के लिए निम्नांकित विवरण प्राप्त होता है - "सभी भाषाओँ के शिक्षण को नवीन और अनुभवात्मक विधियों के माध्यम से समृद्ध किया जायेगा, जिसमें सरलीकरण और एप्स के माध्यम से, भाषाओँ के सांस्कृतिक पहलुओं - जैसे फिल्म, थिएटर, कथावाचन, काव्य और संगीत - को जोड़ते हुए और विभिन्न प्रासंगिक विषयों के साथ और वास्तविक जीवन के अनुभवों के साथ सबंधों को दिखाते हुए इन्हें सीखाया जायेगा। इस प्रकार, भाषाओँ का शिक्षण भी अनुभवात्मक-अधिगम शिक्षणशास्त्र पर आधारित होगा ।" **जो कला 1 गीत गाना को निखारने के लिए पुख्ता है** ।

कला - देशी भाषा ज्ञान - प्राकृतिक बोलियों को जानना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अध्याय 4 के उपविभाग 4.11 में इस कला के लिए निम्नांकित विवरण प्राप्त होता है - "यह सर्व विदित है की छोटे बच्चे अपनी घर की भाषा / मातृभाषा में सार्थक अवधारणाओं को अधिक तेजी से सीखते है और समझ लेते है । घर की भाषा आमतौर पर मातृभाषा या स्थानीय समुदायों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है । हालांकि, कई बार बहुभाषी परिवारों में, परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा बोली जानेवाली एक घरेलू भाषा हो सकती है, जो कभी-कभी मातृभाषा या स्थानीय भाषा से भिन्न हो सकती है । जहाँ तक सम्भव हो कम से कम ग्रेड 5 तक लेकिन बेहतर यह होगा की यह ग्रेड 8 और उससे आगे तक भी हो, शिक्षा का माध्यम, घर की

https://www.gapbhasha.org/

GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

भाषा/मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा होगी । इस के बाद घर/स्थानीय भाषा को जहाँ भी संभव हो भाषा के रूप में पढाया जाता रहेगा । सार्वजनिक और नीजि दोनों तरह के स्कूल इसकी अनुपालना करेंगे । विज्ञान सहित सभी विषयों में उच्चतर गुणवत्ता वाली पाठ्यपुस्तकों घरेलू भाषाओं/ मातृभाषा में उपलब्ध कराया जाएगा । यह सुनिश्चित करने के लिए सभी प्रयास जल्दी किए जाएँगे कि बच्चे द्वारा बोली जानेवाली भाषा और शिक्षण के माध्यम के बीच यदि कोई अंतराल मौजूद हो तो उसे समाप्त किया जा सके । ऐसे मामलों में जहाँ घर की भाषा की पाठ्य सामग्री उपलब्ध नहीं है, शिक्षकों और छात्रो के बीच संवाद की भाषा भी जहाँ संभव हो, वहाँ घर की भाषा बनी रहेगी । शिक्षकों को उन छात्रों के साथ जिनके घर की भाषा/मातृभाषा शिक्षा के माध्यम से भिन्न है, द्विभाषी शिक्षण अधिगम सामग्री सहित द्विभाषी एप्रोच का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जायेगा । सभी भाषाओं को सभी छात्रो को उच्चतर गुणवत्ता के साथ पढाया जाएगा । एक भाषा को अच्छी तरह से सिखाने और सिखने के लिए इसे शिक्षा का माध्यम होने की आवश्यकता नहीं है।" और उपविभाग 4.18 में इस कला के लिए निम्नांकित विवरण प्राप्त होता है - "भारत में शास्त्रीय तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम और उडिया अन्य शास्त्रीय भाषाओं में एक अत्यंत समृध्ध साहित्य है; इस शास्त्रीय भाषाओं के अतिरिक्त पालि, फारसी, प्राकृत और उनके साहित्य को भी उनकी समृद्धि के लिए और भावि पीढ़ी के सुख और समृद्धि के लिए संरक्षित किया जाना चाहिए । "**जो देशी भाषा ज्ञान कला को निखारने के लिए पुख्ता है** ।

कला - नाटिकाख्यायिका दर्शन - नाटक देखना और दिखाना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अध्याय 4 के उपविभाग 4.21 में इस कला के लिए निम्नांकित विवरण प्राप्त होता है - "सभी भाषाओं के शिक्षण को नवीन और अनुभवात्मक विधियों के माध्यम से समृद्ध किया जायेगा, जिसमें सरलीकरण और एप्स के माध्यम से, भाषाओं के सांस्कृतिक पहलुंओं - जैसे फिल्म, थिएटर, कथावाचन, काव्य और संगीत - को जोड़ते हुए और विभिन्न प्रासंगिक विषयों के साथ और वास्तविक जीवन के अनुभवों के साथ सबंधों को दिखाते हुए इन्हें सीखाया जायेगा। इस प्रकार, भाषाओं का शिक्षण भी अनुभवात्मक-अधिगम शिक्षणशास्त्र पर आधारित होगा। "**जो नाटिकाख्यायिका दर्शन कला को निखारने के लिए पुख्ता है** ।

कला धारण मातृका - स्मरण शक्ति बढ़ाना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अध्याय 4 के उपविभाग 4.4 में इस कला के लिए निम्नांकित विवरण प्राप्त होता है - "सभी स्तरों पर पाठ्यचर्या और शिक्षा विधि का समग्र केंद्र बिंदु शिक्षा प्रणाली को **रटने की पुरानी प्रथा से** अलग वास्तविक समझ और ज्ञान की ओर ले जाना है। " और 4.40 में "ये परीक्षाएँ रटकर याद करने की बजाए प्रासंगिक उच्चत्तर क्रम के कौशलों और वास्तविक जीवन स्थितियों में ज्ञान के अनुप्रयोग के साथ-साथ राष्ट्रीय और स्थानीय पाठ्यक्रम से मूल अवधारणाओं और ज्ञान के मूल्यांकन के माध्यम से बुनियादी शिक्षण परिणामों की उपलब्धि का परीक्षण करेंगी" **जो धारण मातृका कला को निखारने के लिए पुख्ता है** ।

कला - वास्तुविद्या के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अध्याय 4 के उपविभाग 4.27 में इस कला के लिए निम्नांकित विवरण प्राप्त होता है - "विशेष रूप से भारतीय ज्ञान प्रणाली को आदिवासी ज्ञान एवं सिखाने के स्वदेशी और पारंपरिक तरीकों सहित कवर किया जाएगा और गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, **वास्तुकला**, चिकित्सा कृषि इंजीनियरिंग भाषा विज्ञान साहित्य खेल के साथ साथ शासन, राजव्यवस्था, सरक्षण, आदि विषयों में शामिल किया जाएगा ।"**जो वास्तुविद्या कला को निखारने के लिए पुख्ता है** ।

कला पाठ्य- किसी को बोलते हुए गाते हुए देखकर उसके अनुसार बोलना राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अध्याय 4 के उपविभाग 4.2 "यह कार्य विज्ञानं, गणित, कला खेल, सामाजिक विज्ञान, मानविकी और व्यवसायिक विषयों में होंगे। हर विषय में अनुभव आधारित शिक्षण और विषय विशेषज्ञों के आ जाने के बावजूद विषयों के बीच परस्पर सम्बन्ध देखने को प्रोत्साहित किया जायेगा।" **जो इस कला को निखारने के लिए पुख्ता है** ।

कला - पहेलिका - दुसरे को बोलते हुए बंध करना जिसके लिए समस्यायुक्त प्रश्न पूछना के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अध्याय 4 के उपविभाग 4.5 में "पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को प्रत्येक विषय में कम करके इसे बेहद बुनियादी चीजों पर केंद्रीत किया जाएगा ताकि आलोचनात्मक और समग्र, खोज - आधारित, चर्चा-आधारित, और विश्लेषण आधारित अधिगम पर जरुरी ध्यान दिया जा सके। यह विषयवस्तु अब मुख्य अवधाराणाओं, विचारों, अनुप्रयोगों, और समस्या समाधान पर केन्द्रित होगी । शिक्षण और शिक्षा अधिक संवादात्मक तरीके से संचालित होगा

https://www.gapbhasha.org/

सवाल पछने को प्रत्साहित किया जायेगा, और कक्षाओं में नियमित रूप से अधिक रुचिकर, रचनात्मक सहयोगात्मक और खोजपूर्ण गतिविधियाँ होगी ताकि गहन और प्रायोगिक सीख सुनिश्चित किया जा सकें ।" और उपविभाग 4.25 में "इस प्रकार गणित और कम्प्युटेशनल सोच को विभिन्न प्रकार के अभिनव तरीकों, जिनमे पहेलियाँ और गेम का नियमित उपयोग शामिल है ।"**जो पहेलिका कला को निखारने के लिए पुख्ता है** ।

कला - बालक्रिडा कर्म - बालको को खेल ने की लिए उत्सुक करना के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अध्याय 4 के उपविभाग 4.4 में "NCERT इन अपेक्षित कौशलो की पहचान करेगा और आरंभिक वाल्यावस्था एवं स्कूल शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचे में उनके व्यवहार के लिए तंत्र शामिल करेगा। " और उपविभाग 4.28 में "बच्चों को पंचतंत्र की मूल कहानियों, जातक हितोपदेश और अन्य मजेदार दंतकथाओ और भारतीय परंपरा से प्रेरक कहानियों को पढने और सीखने का अवसर मिलेगा और वैश्विक साहित्य पर उनके प्रभावों के बारे में भी वे जानेंगे।" **जो बालक्रिडा कर्म कला को निखारने के लिए पुख्ता है** ।

कला विनायकी विद्या ज्ञान विनय शिष्टाचार इल्म आदि के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अध्याय 4 के उपविभाग 4.2 में "इसमे अच्छे व्यवहार, शिष्टाचार, नैतिकता, व्यक्तिगत और सार्वजानिक साफ- सफाई/ स्वछता, टीम वर्क और सहयोग इत्यादि पर भी ध्यान केन्द्रित किया जायेगा" और उपविभाग 4.4 में "शिक्षा का उद्देश केवल संज्ञात्मक समझ न होकर चरित्र निर्माण और इक्कीसवीं सताब्दी के मुख्य कौशल्य से सुसज्जित करना होगा ।" और उपविभाग 4.28 में "स्वास्थ्य में बुनियादी प्रशिक्षण जिसमें निवारक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, अच्छा पोषण, व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता, आपदा प्रतिक्रिया और प्राथमिक चिकित्सा शामिल है के साथ ही साथ शराब, तम्बाकू और अन्य मादक पदार्थों के हानिकारक और विपरित प्रभावों की वैज्ञानिक व्याख्या को भी पाठ्यक्रम में शामिल किया जायेगा।" **जो विनायकी विद्या ज्ञान विनय शिष्टाचार इल्म कला को निखारने के लिए पुख्ता है**।

कला काव्य समस्या पूर्ति कविता की पादपूर्ति करना के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अध्याय 4 के उपविभाग 4.21 में "सभी भाषाओं के शिक्षण को नवीन और अनुभवात्मक विधियों के माध्यम से समृद्ध किया जायेगा, जिसमें सरलीकरण और एप्स के माध्यम से, भाषाओं के सांस्कृतिक पहलुओं - जैसे फिल्म, थिएटर, कथावाचन, काव्य और संगीत - को जोड़ते हुए और विभिन्न प्रासंगिक विषयों के साथ और वास्तविक जीवन के अनुभवों के साथ सबंधों को दिखाते हुए इन्हें सीखाया जायेगा। इस प्रकार, भाषाओं का शिक्षण भी अनुभवात्मक-अधिगम शिक्षणशास्त्र पर आधारित होगा। " **जो काव्य समस्या पूर्ति कला को निखारने के लिए पुख्ता है**।

कला **म्लेछित कला विकल्प = म्लेच्छ और विदेशी भाषा जानना** के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अध्याय 4 के उपविभाग 4.20 में "भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी में उच्चतर गुणवत्ता वाले कोर्स के अलावा, विदेशी भाषाएँ जैसे कोरियाई जापानी, थाई फ्रेंच, जर्मन स्पेनिश पुर्तगाली और रुसी भी माध्यमिक स्तर पर व्यापक रूप से अध्यनन हेतु उपलब्ध करवाई जाएँगी, ताकि विद्यार्थी विश्व संस्कृतियों के बारे में जाने, और अपनी रुचियों और आकाक्षाओं के अनुसार अपने वैश्विक ज्ञान को दुनिया भर में घुमने-फिरने को सहजता से बढ़ा सकें ।" **जो इस कला को निखारने के लिए पुख्ता है** ।

उपसंहार

इस प्रकार भारतीय शिक्षा प्रणाली में सूचित 64 कलाओं में से शोधपत्र की शब्द मर्यादा और समय मर्यादा के कारण आलेख लेखक ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के केवल अध्याय 4 में सूचित पाठ्यक्रम में से प्राप्त 64 में से 12 कला (1 गीत गाना, 4. देशी भाषा ज्ञान - प्राकृतिक बोलियों को जानना, 7. नाटिकाख्यायिका दर्शन - नाटक देखना और दिखाना 16. धारण मातृका - स्मरण शक्ति बढ़ाना, 19 वास्तुविद्या, 20. पाठ्य- किसी को बोलते हुए गाते हुए देखकर उसके अनुसार बोलना, 39. वृक्ष आयुर्वेद योग वृक्ष का ज्ञान, चिकित्सा, 46. पहेलिका - दुसरे को बोलते हुए बंध करना जिसके लिए समस्यायुक्त प्रश्न पूछना, 52. बालक्रिडा कर्म - बालको को खेल ने की लिए उत्सुक करना, 56. विनायकी विद्या ज्ञान विनय शिष्टाचार इल्म आदि करना, 62. काव्य समस्या पूर्ति कविता की पादपूर्ति करना, 63. म्लेछित कला विकल्प = म्लेच्छ और विदेशी भाषा जानना) को निखारने की क्षमता को स्पष्ट किया है ।

https://www.gapbhasha.org/

सन्दर्भ सूचि

[1] https://www.jagran.com/editorial/apnibaat-ncr-the-imperative-of-indian-knowledge-tradition-in-the-education-system-22412895.html
[2] Ajay Kurien, Sudeep B. Chandramana. "Impact of New Education Policy 2020 on Higher Education," Research Gate, November 2020.
[3] Dominic Amalan .A, Dr. Surendra Chandrakant Herkal, Dr. Naveen Kumar M. Dr. Neeta Bhatt, Dr. Varsha Bapat: A Study of India's New Policy Framework for Education, Eur. Chem. Bull, 2023.
[4] Sukanta Kumar Naskar, Sushovan Chatterjee: The Influence of Indian Ancient Educational Systems on India's Educational Strategy. 2013
[5] Urmila Yadav. "A Comparative Study of Ancient & Present Education System," Research Gate, January 2018.
[6] आर्य. अ. (2018). भारतीय ज्ञान परंपरा सामाजिक जरूरतों की उपज, मीडिया नवचिंतन, वर्ष 18, 68-73
[7] गढ़वी, म.(2023), वैदिक शिक्षण प्रणाली तेमज प्रवर्तमान शिक्षण प्रणालीमा विज्ञान, गेप भाषा, 4,3., 33-41.
[8] जाटवाडी, आर.(2000) धर्म दर्शन की रूपरेखा, नाईस प्रिन्टर्स, दिल्ली
[9] प्रभाकर. भा. (2023), भारतीय ज्ञान प्रणालीनी तत्त्वज्ञान/विचार आने प्रयोगोना विशिष्ट सन्दर्भमा पद्धतिसरनी समीक्षा, गेप भाषा, 4.3, 80-86
[10] प्रजापति, एन. (2022), प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धतीनी वर्तमान प्रासंगिकता, गेप भाषा, 3,4. 06-8.
[11] महेता, नंदुला, काशीद एवं मोदी, (2023), राष्ट्रीय शिक्षण नीति अने प्राचीन भारतीय शिक्षण प्रनालीनो अभ्यास, गेप भाषा, 4,3., 1-4.
[12] मेक्समूलर(2001) धर्म की उत्पति ग्रंथ विकास जयपुर
[13] मोरसीवी. एल. (2002) वेद और आधुनिक विज्ञान, नाईस प्रिन्टर्स, दिल्ली
[14] राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020), शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
[15] शर्मा आलोक (2004) प्राचीन एवं अर्वाचिन शिक्षा प्रणाली के परिप्रेक्ष्य मे वेदांत शिक्षा का महत्व, जयपुर, राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केन्द्र
[16] वानिया, बी. (2023), ईश्वर की सर्वज्ञता और मनुष्य की संकल्प स्वतंत्रता: भारतीय दर्शन के परिप्रेक्ष्य में, गेप भाषा, 4.3, 90-92.
[17] ભરવાડ, અ, (2003) વિકાસમાન ભારતીય સમાજમાં શિક્ષક, વારિષેણ પ્રકાશન, અમદાવાદ

https://www.gapbhasha.org/